मौन्बतियाँ जलते हैं और मर्द और महिलाऐं यहाँ आपस में चढ़ाई या उतरे के वक़्त मिल्ज्तय हैं ये एक नवीनता है .और हम अल्लाह से दुआ करते हैं की यह नवीनता ख़तम होजये.

इब्न तमियाह अल हंबली मजमु अल फतवा में केहते हैं “ पर्वता पी चड़ना या उतरना सुन्नत नहीं है”

इब्न तमियाह अल हंबली अल इख्तियारात अल अलियाह में लिखते है “ ये विद्वानों की आम राय है की पर्वत पे चड़ना ठीक नहीं है

III. निर्वानाता और नासिविकर्ने लायक कार्रवाई जो कुछ तिरिथि करते हैं .

कुछ तिरिथ कई साड़ी नवीनताओं में शामिल होते है क्यूँ की वो यह सूच्तय हैंकि यह जगह पवित्र है..कुछ गलत चीज़ुं को हम आप के सामने रह्क्थय है

जिन से आप को दूर रहना चाहिये :

१.ये सूचना की यहाँ खड़ा रेहान बाकि अरफः की जगहों से बेहतर है .

२. अरफः पर्वत पे खुतबा देना और प्रार्थना करना .

३.इस पर्वता पे मोमबत्ती जलना या आग जलना .

४ इस पर्वता की धुल साथ लीजन.

५ अरफः के स्तंभ को चुना या चुंबन .

६ स्तंभ की तरफ प्रार्थना करना .

७. स्तंभ पे लिखना .

८. स्तंभ की परैक्रिमा करना

९. स्तंभ पे कपडा का टुकड़ा बंधना .

१०.कागज़,तस्वीरून ,पिसुन तालों के छोटे तुक्डून पे लिखकर उसे स्तंभ की दरारों में रखना ,और यह उम्मीद रखना की मारा हुवा वापस आये गा, बीमार आदमी ठीक हो जाये गा ,बैंज महिला बछा पैदा कराय फे .

११. अरफः पर्वत के सामने किसी का नाम ज़ोर ज़ोर से पुकारना ,ताकि वोह इंसान अगले साल हज कर सके.

कुछ ऐसे नाविनातैन हैं जिस के लिये अल्लाह ने कोई अधिकार नहीं भेजे है

अल्लाह हमे इन गलतियुं से दूर राकह्य. अमीन

VISION رؤيــــة 2030
المملكة العربية السعودية
KINGDOM OF SAUDI ARABIA

المملكة العربية السعودية
الـــرئـــاســـة العـــامـــة
لهيئة الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر
الإدارة العـــامـــة للتـــوعيـــة

अरफः की पर्वता

هنـــدي

इसको जांच किया है:
डा. शैख़ सुलेमान बिन सलीमुल्लाह अर्रहीली

الرئاسة العامة لهيئة الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر - الإدارة العامة للتوعية
هاتف ١١٤٩٠٨٤٨٦، فاكس ١١٤٩٠٨٥٦٦.
ص. ب ١٤٠٣٣ الرياض ١١٤٢٤ المملكة العربية السعودية
www.pv.gov.sa

I.स्थान

अरफः की पर्वता बाकि बड़ी बड़ी पर्वतों जो इस के इदगिर्द है उन के मुकाबली छोटी है. ये बडे बडे पथारून का बन हुआ है,जो एक के ऊपर एक ढेर की सूरत मेंही है बजाय की वोह एक ही ज़मीन के टुकडे से बना हो.यह अरफः के पूर्वी हिस्से में साद पर्वता की छाया . यह अपनी दक्षिणी चेरी से शिखर तक लगभग ६५m लंबा है..

इसे जबल इलाल,जबल अरफः,आर रहम,जबल अड़-दुआ,जबल अल मुशात,जबल कब्काब और जबल अल कुरयं से जाना जाता है लेकी जबल इलाल और जबल अरफः कई बागी किस और नाम का कोई सबूत नहीं है.

II. अरफः पर्वता का विवरण.

कई विद्वान केहते है किमिस का कोई सबूत नहीं है की अरफः पर्वत में कोई खासियत है, वो केहते हैं की यह एक आम पर्वता है ,वो यह भी केहते हैं की अरफः पर्वता पे चडने का कोई अनुस्ठाना नहीं है .

अल अल्लामः मुल्ला अली कारी अल हनफी (अल्लाह उन पे रहम करें) केहतें हैं की "अरफः पर्वता पे चडने का कोई आधार नहीं है ,ये एक नवीनता है."

वो यह भी केहते हैं " एक एय्से जगह पे खड़ा रहना जहाँ पे जाहें को नीचे घिरना का धर न हो वहां पे खड़ा रहना ठीक है , उस पे चड़ना और खड़ा रहना एक नवीनता है .

इमाम एबीएन अल हाजिब अल मालिकी(अल्लाह उन पे रहम करें) केहते अहिं की कई सारे नाविनातैन इस पर्वत के बारे में की गए है जिन में से एक " अरफः पर्वता पे रात के समय आग जलना , मौन्बती जलना,और मर्दुन और महिलायों के अरफः की पर्वता पे एक साथ चढ़ाई करना गलत है. और महिलाओं और मर्दों का ऐसी पाक जगह पे मिलना शिरिक है.

अल शंकीती अल मालिकी(अल्लाह उन पे रहम करें) ने अदवा अल बयान(५/२६३) में कहा है " ये याद रखना चाहिये की अरफः की पर्वता पे चड़ना जप कई सारे आम लूग करते हैं उस की कोई बुनियाद नहीं है ,ये कोई ख़ास जगह नहीं है, यह बाकि अरफः की तरह है और अरफः खड़ा रेहनी की जगह है"

अल जुवाय्नी अश शाफी(अल्लाह उन पे रहम करें) केहते हैं " अरफः की पर्वता को दया की पर्वत केहते हैं और इस पे चडने का कोई अनुष्ठान नहीं है"

अन नववी अश शाफी (अल्लाह उन पे रहम करें) ,अल मजमु(८/१०७) में केहते हैं "की जो वहां के आम लोगों को लगता है की अरफः पर्वता पे खड़ा रहना सुन्नाह हिया बिलकुल गलत है और सुन्नत नहीं है , कोई भी विद्वान इस को साबित नहीं करसकता है,इस पर्वता पे भी वोही नियम लागु होते है जो बाकि अरफः पे लागु होते है.

अल मुहिब्ब अत तबरी(अल्लाह उन पे रहम करें), अश शाफी अल कीरा (p ३८६) में लिखते है " ऐसा कोई सबूत नहीं है की जिस से पता चले की कोई ऐसे पर्वता है जिस पे लोग चडने के लिए बेकरार होता हैं".

इब्न जमाह अश शाफी हिदायत अस सालिक में केहते हैं " यह जो कुछ आम लूगों में इस परवता पे खड़ा रहने की बेकरारी होती है, या रात के वक़्त यहाँ